



حصن المسلم من الأمراض والأوبئة

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

باللغة الهندية



إعداد
جمعية الدعوة والإرشاد وتوظيف الحاليات بالربوة

(1)

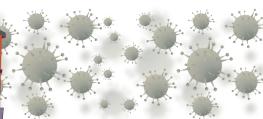
बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَا مِنْ عَبْدٍ يَقُولُ فِي صَبَاحٍ كُلَّ يَوْمٍ وَمَسَاءً كُلَّ لَيْلَةٍ: بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ، فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاوَاتِ، وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَيُضْرِبُهُ شَيْءٌ» [صحيح ابن ماجه: 3134]

وفي رواية: «مَنْ قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي ...، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، لَمْ تُصِبْهُ فَجَاهَةُ بَلَاءٍ حَتَّى يُصْبِحَ، وَمَنْ قَالَهَا حِينَ يُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ لَمْ تُصِبْهُ فَجَاهَةُ بَلَاءٍ حَتَّى يُمْسِيَ» [صحيح أبي داود: 5088]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जो बंदा हर दिन की सुबह को और हर रात की शाम को तीन बार यह दुआ ‘बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यजुर्रु मअ्सिमि हैउन फिल्अर्जिं व ला फिस्समाइ व हुवस्समीउल अलीम’ (उस अल्लाह के नाम से जिस के नाम के साथ ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुकसान नहीं दे सकती, और वह ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है) पढ़े, उसे कोई चीज़ नुकसान नहीं पहँचायेगी।” {सहीह इब्नु माजा: ३९३४}

और एक रिवायत में है: “जिस ने (शाम को) यह दुआ ‘बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ---’ तीन बार पढ़ ली, उसे सुबह तक कोई अचानक बला (आफ़त व मुसीबत) नहीं पहँचेगी। और जिस ने सुबह के वक्त यह दुआ तीन बार पढ़ ली, उसे शाम तक कोई अचानक बला नहीं पहँचेगी।” {सहीह अबू दाऊद: ५०८८}

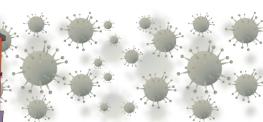


(2)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ وَالْمَعْوذَتَيْنِ، حِينَ تُمْسِي وَحِينَ
تُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَاتٍ، تَكْفِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ» [صحيح الجامع: 4406]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “सूरह इख्लास (कुल् हुवल्लाहु अहद ---), सूरह फ़तक (कुल् अऊझु बिरब्बिल् फ़लक ---) और सूरह नास (कुल् अऊझु बिरब्बिन नास ---) सुबह और शाम को तीन तीन बार पढ़ लो, तो यह तुम को हर चीज़ से काफ़ी हो जायेंगी।” {सहीहुल जामेः ४४०६}



(3)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ قَالَ إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ: بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ. يُقَالُ لَهُ: كُفِيتَ وَوْقِيتَ وَتَنَحَّى عَنْهُ الشَّيْطَانُ» [صحیح الجامع: 6419]

रसूलुल्लाह ﷺ ने कर्माया: “जो व्यक्ति अपने घर से निकलते समय पढ़े: ‘बिस्मिल्लाह, तवक्कल्लुतु अल्लाह, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह’ (अल्लाह के नाम से, मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूँ, किसी शर्द और बुराई से बचना तथा किसी ख़ैर या नेकी का हासिल होना अल्लाह की मदद के बगैर मुम्किन नहीं), तो उसे कहा जाता है: तेरी किफायत की गई और तुझे बचा लिया गया, और शैतान उस से दूर हो जाता है।” {सहीहुल जामेः ٦٤٩٦}



(4)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: «مَنْ نَزَّلَ مِنْ زَلَّا
ثُمَّ قَالَ: أَعُوذُ بِكَلَمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرِّهِ شَيْءٌ، حَتَّىٰ

[2708] [صحيح مسلم: يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلَهِ ذَلِكَ]

खौला बिन्ते हकीम रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: ‘‘जो शख्स किसी मंज़िल में उतरे फिर कहे: ‘अज़जु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक’ (मैं अल्लाह तआला के परिपूर्ण वाणी (मुकम्मल कलिमात) के ज़रीया उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह माँगता हूँ जो उस ने पैदा की हैं), तो उस को कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचायेगी यहाँ तक कि वह उस मंज़िल से कूच कर जाये।’’ {सहीह मुस्लिम: २७०८}



(5)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ رَأَى مُبْتَلِي فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا أَبْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ خَلْقٍ تَفْضِيلًا، لَمْ يُصْبِهِ ذَلِكَ الْبَلَاء»

[صحیح الجامع: 6248]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जो किसी मुसीबत ज़दा (आपदाकांत) को देख कर कहे: ‘अल्लाहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मबृतलाक बिहि, व फ़ज्ज़लनी अला कसीरिम मिम्मन ख़लक़ तफ़ज़ीला’ (सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझ को उस मुसीबत से बचाया जिस में उस ने तुझ को मुबृतला किया, और मुझे फ़ज़ीलत दी अपनी बहुत सारी मख़लूक़ात पर), तो उस को वह मुसीबत नहीं पहुँचेगी।” {सहीहुल जामेः ६२४८}

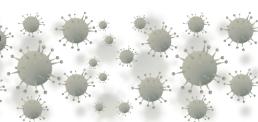


(6)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنِ الْبَرَصِ وَالْجُنُونِ وَالْجَذَامِ، وَمَنْ سَيِّئَ لِأَسْقَامِ» [صحیح الجامع: 1281]

अनस बिन मालिक رض बयान करते हैं कि नवी رض दुआ किया करते थे: “अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिनल् बरसि वलजुनूनि वलजुज़ामि, व मिन् सैयिइल् अस्क़ाम ।” (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बरस (चितकब्रे दाग), जुनून (पागल पन), कूढ़ और बुरी बीमारीयों से)। {सहीहुल जामेः ۹۲۷۹}



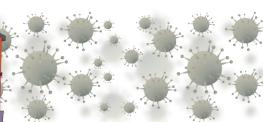
(7)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحْوُلِ عَافِيَّتِكَ، وَفُجَادَةِ نِقْمَتِكَ، وَجَمِيعِ سَخَطِكَ»

[صحيح مسلم: 2739]

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ की दुआओं में से एक दुआ यह थी: “अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन् ज़वालि निअमतिक, व तहव्वुलि आफ़ियतिक, व फुजाअति निक़मतिक, व जमीइ सख़तिक।” (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ तेरी नेमत के ज़ायेल (ख़त्म) होने, तेरी आफ़ियत व शांति के बदलने, तेरी सज़ा के अचानक आने और तेरी सारी नाराज़गी से)। {सहीह मुस्लिम: २७३६}

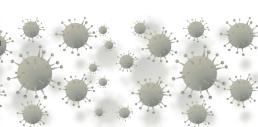


(8)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: «مَا مِنْ دَعْوَةٍ يَدْعُو بِهَا الْعَبْدُ أَفْضَلُ مِنْ دَعْوَةِ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْمَعَافَةَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ» [صحيح الجامع: 5703]

अबू हुरैरा رضي الله عنه बयान करते हैं कि नबी صلوات الله عليه وسلم ने फ़रमाया: “बंदा जो भी दुआ माँगता है वह इस दुआ से अफ़ज़ल नहीं होती: ‘अल्लाहुम्म इन्नी अस्�अलुकल् मुआफ़ात फ़िदुनया वलआखिरह’ (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आखिरत में आफ़ियत व शांति का सवाल करता हूँ)।” {सहीहुल जामेः ५७०३}



(9)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «دَعْوَةُ ذِي النُّونِ إِذْ دَعَا وَهُوَ فِي بَطْنِ الْحُوتِ: لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سَبَّحَنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ، فَإِنَّهُ لَمْ يَدْعُ بِهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ فِي شَيْءٍ، قَطُّ إِلَّا اسْتَجَابَ لَهُ» [صحيح الترغيب: 1644]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जिन्नून (यूनुस ﷺ) की दुआ जो उन्होंने मछली के पेट में की थी: ‘ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज्ज़ालिमीन’ (नहीं है कोई सच्चा मावूद मगर तू, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों में से हूँ), जो कोई मुस्लिम शख्स इस के द्वारा किसी भी विषय में दुआ करेगा, अल्लाह उसे कबूल फ़रमायेगा।” {सहीहुत तरगीब: ۹۶۴۴}

इनुल कैइम रहेमहुल्लाह ने फरमाया: कठोर से कठोर मुसीबत तौहीद जैसे विषय से टल जाती है। इसी लिए मुसीबत की दुआ तौहीद के साथ आई है। और जिन्नून की तौहीद वाली उक्त दुआ जो मुसीबत ज़दा शख्स करेगा, अल्लाह तथा उस की मुसीबत को दूर फ़रमायेगा। {अल्फवाइद: ۶۶}

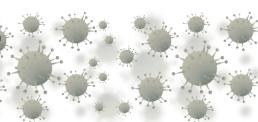


(10)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعُوذُوا بِاللَّهِ مِنْ جَهَدِ الْبَلَاءِ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ» [صحيح البخاري: 6616]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की पनाह माँगो: ‘अऊजु बिल्लाहि मिन् जह्दिल् बला, व दरकिश शका, व सूइल् कज़ा, व शमाततिल् अअदा’ (मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ आज़माइश की सख्ती से, और बद्र बख्ती के पाने से, और बुरे फैसले से, और दुश्मनों के हँसने से)।” {सहीह बुखारी: ६६१६}



(11)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ أَنَّهُ قَالَ لَأُبَيِّهِ: يَا أَبَتِ إِنِّي أَسْمَعُكَ تَدْعُو
كُلَّ غَدَاءً: «اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدْنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي
فِي بَصَرِي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، اللَّهُمَّ
إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ» تُعِيدُهَا ثَلَاثًا حِينَ تُصْبِحُ،
وَثَلَاثًا حِينَ تُمْسِي، فَتَدْعُو بِهِنْ. فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَدْعُو
بِهِنْ، فَإِنَّا أَحَبُّ أَنْ أَسْتَنِ بِسُنْتِهِ. [صحیح ابی داؤد: 5090]

अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्रा से रिवायत है कि उन्होंने अपने बाप से कहा: ऐ अब्बाजान! मैं आप को रोज़ाना यह दुआ करते सुनता हूँ: 'अल्लाहुम्म आफिनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्म आफिनी फ़ी सम्रई, अल्लाहुम्म आफिनी फ़ी बसरी, ला इलाह इल्ला अनूत। अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिनल् कुफ़ि वलफ़कूरि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि, ला इलाह इल्ला अनूत' (ऐ अल्लाह! मुझे मेरे बदन में आफियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कानों में आफियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी आँखों में आफियत दे। तेरे सिवा कोई सच्चा मावूद नहीं। ऐ अल्लाह! मैं कुफ़ि और मुहताजगी से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! क़ब्र के अज़ाब से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई सच्चा मावूद नहीं)। आप सुबह को तीन मरूतबा और शाम को भी तीन मरूतबा पढ़ कर इन शब्दों के ज़रीया दुआ करते हैं। तो उन्होंने कहा: मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को इन अलफ़ाज़ के ज़रीया दुआ करते सुना है, इस लिए चाहता हूँ कि मैं आप की सुन्नत की इक्तिदा और पैरवी करूँ। {सहीह अबू दाऊद: ५०८०}



(12)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ يَدْعُ هُؤُلَاءِ الْكَلْمَاتِ حِينَ يُمْسِي وَحِينَ يَصْبِحُ «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايِّ وَأَهْلِيِّ وَمَالِيِّ اللَّهُمَّ اسْتَرْ عُورَاتِي وَأَمْنِ رَوْعَاتِي اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدِيِّ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَائِلِي وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي» [صحیح الکلم الطیب: 27]

अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा बयान फ़रमाते हैं कि नबी ﷺ हमेशा सुबह और शाम को इन कलिमात के ज़रीया (शब्दों द्वारा) दुआ किया करते थे: ‘अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकलू आफियत फिद्दुन्या वलूआखिरह, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकलू अ़फूव वलूआफियत फ़ी दीनी व दुन्याय व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मसुतुर औराती व आमिन रौआती, अल्लाहुम्महफ़ज़नी मिम्रैबैन यदैय, व मिन ख़ल्फी, व अन यमीनी, व अन शिमाली, व मिन फौकी, व अ़ज़्जु बिअ़ज़्मतिक अन् उग्रताला मिन तह्ती’ (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आखिरत में आफियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने माल में माफ़ी तथा आफियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दा वाली चीज़ों पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को अन्न में रख। ऐ अल्लाह! मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दायें तरफ से, मेरी बायें तरफ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफ़ाज़त कर। और मैं इस बात से तेरी अ़ज़्मत व बड़ाई की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ।)’ {सहीहुल कलिमित तैइब: २७}



(13)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ صَلَى الصَّبَحَ فَهُوَ فِي ذَمَّةِ اللَّهِ» [صحیح مسلم: 657]

رسूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ‘‘जिस ने फ़ज्ज़ की नमाज़ पढ़ी वह अल्लाह की पनाह और उस के हिफ़्ज़ व अमान में है।’’ {सहीह मुस्लिम: ६५७}



(14)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «مَنْ قَرَا بِاللَّيْتِينَ مِنْ أَخْرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَاهُ» [صحيح البخاري: 5009، صحيح مسلم: 808]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जिस ने सूरह बक़रा की आखिरी दो आयतें रात में पढ़ लीं, वह उसे हर आफ़त से बचाने के लिए काफ़ी हो जायेंगी।”
{सहीहुल बुखारी: ५००६, सहीह मुस्लिम: ८०८}

इमाम नववी रहेमहुल्लाह ने फ़रमाया: काफ़ी हो जायेंगी का मतलब: १- कहा गया: तहज्जुद की नमाज़ की तरफ से। २- शैतान से बचाने के लिए। ३- आफ़त से बचाने के लिए। ४- मुस्किन है मज़्कूरा तमाम चीज़ों से।
{नववी रचीत सहीह मुस्लिम की शरूह}



(15)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ الشَّيْطَانَ قَالَ لَهُ: إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَاقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ مِنْ أَوْلَاهَا حَتَّى تَخْتَمِ الْآيَةَ {اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْقَيُومُ} وَقَالَ لِي: لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللَّهِ حَافِظٌ وَلَا يَقْرُبُكَ شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ وَكَانُوا أَحْرَصَ شَيْءاً عَلَى الْخَيْرِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «أَمَّا إِنَّهُ قَدْ صَدَقَ وَهُوَ كَذُوبٌ» [صحیح الترغیب: 610]

अबू हुरैरा رضي الله عنه बयान करते हैं कि शैतान ने उन से कहा: जब विस्तर पर लेटो तो आयतुल कुर्सी ‘अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल् हैयुल् कैयूम’ शुरू से आग्निक तक पढ़ लो। उस ने मुझ से यह भी कहा: अल्लाह तआला की तरफ से तुम पर (इस के पढ़ने से) एक निगराँ फ़रिश्ता मुकर्रर रहेगा और सुबह तक शैतान तुम्हारे करीब भी नहीं आ सकेगा। और सहाबा ख़ैर को सब से आगे बढ़ कर लेने वाले थे। नबी करीम صلوات الله عليه وسلم ने (उन की यह बात सुन कर) फ़रमाया: “अगरचे वह झूटा था, लेकिन यह बात तुम से सच कह गया है।” {सहीहुत तरगीब: ६१०}



(16)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّدَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الدُّعَاءُ يَنْفُعُ مَا نَزَلَ، وَمَا لَمْ يَنْزَلْ، وَإِنَّ الْبَلَاءَ لَيَنْزُلُ، فَيَتَقَاهُ الدُّعَاءُ، فَيَعْتَجَانِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ» [حسن]. صحيح

[الجامع: 7739]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जो आफ़त नाज़िल हुई है और जो नाज़िल नहीं हुई है, दुआ दोनों से फ़ायदा देती है। और जब बला-मुसीबत नाज़िल होती है, तो दुआ उस से मुलाक़ात करती है। पस दोनों कियामत दिवस तक झगड़ते रहेंगे।” {हसन, सहीहुल जामेः ۷۷۳۶}



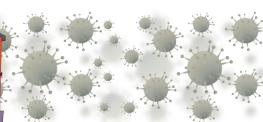
(17)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ، فَإِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِينَ قَبْلَكُمْ،
وَقُرْبَةٌ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى، وَمُنْهَاةٌ عَنِ الْإِثْمِ، وَتَكْفِيرُ لِلَّسْيَّاتِ، وَمُطْرِدَةٌ

[لِلَّدَاءِ عَنِ الْجَسَدِ]» [صحیح الجامع: 4079]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुम तहज्जुद की नमाज़ को लाजिम पकड़ो, क्योंकि यह तुम से पहले नेक लोगों की आदत रही है, नीज़ यह अल्लाह तआला की कुर्बत का ज़रीया है, पाप से रोकने वाली है, गुनाहों को मिटाने वाली और जिस्म से बीमारी को दूर करने वाली है।” {सहीहुल जामेः ४०७६}



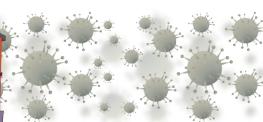
(18)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «صَنَاعُ الْمَعْرُوفِ تَتَيَّزُ مَصَارِ السُّوءِ وَالْأَفَاتِ وَأَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الدُّنْيَا هُمْ أَهْلُ الْمَعْرُوفِ فِي الْآخِرَةِ»

[صحیح الجامع: 3795]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “‘भले और नेकी के काम बुराई, आफ़त व मुसीबत और हलाकत व बरूबादी से बचाते हैं। और दुनिया में भलाई करने वाले लोग ही आखिरत में भलाई पाने वाले हैं।’’ {सहीहुल जामेः ३७६५}

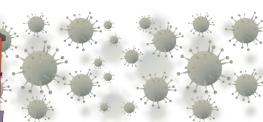


(19)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غَطُّوا إِلَيْنَا، وَأَوْكُوا السَّقَاءَ، فَإِنْ فِي السَّنَةِ لَيْلَةً يَنْزَلُ فِيهَا وَبَاءٌ، لَا يَمْرُرُ بِإِنَاءٍ لَيْسَ عَلَيْهِ غُطَاءٌ، أَوْ سَقَاءٌ لَيْسَ عَلَيْهِ وَكَاءٌ، إِلَّا نَزَّلَ فِيهِ مِنْ ذَلِكَ الْوَبَاءِ» [صحيح مسلم: 2014]

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “बर्तनों को ढाँप दो, और पानी के वर्तन को बंद कर दो। क्योंकि साल में एक रात के अंदर वबा (आपदा) नाज़िल होती है, वह जब खाने पीने के खुले बर्तन पर से गुज़रती है, तो उस में वह वबा दाखिल हो जाती है।” {सहीह मुस्लिम: २०१४}



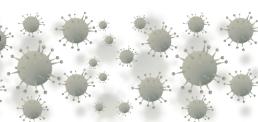
(20)

बीमारी और महामारी से बचने का उपाय

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ خَرَجَ إِلَى الشَّامِ فَلَمَّا جَاءَ بِسْرَغَ، بَلَغَهُ أَنَّ الْوَيْاَءَ وَقَعَ بِالشَّامِ، فَأَخْبَرَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا سِمِّعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلَا تَقْدُمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا، فَلَا تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ» فَرَجَعَ عُمَرُ مِنْ سَرْغٍ.

[صحيح البخاري: 6973]

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ से रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब शाम (सीरीया) की तरफ निकले। पस जब सर्ग नामी मकाम पर पहुँचे, तो उन को यह ख़बर मिली कि शाम वबाई बीमारी की लपेट में है। फिर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है: “जब तुम्हें मालूम हो कि किसी सरज़मीन में वबा फैली हुई है, तो उस में दाखिल मत हो, लेकिन अगर किसी जगह वबा फूट पड़े और तुम वहाँ मौजूद हो, तो वबा से भागने के लिए तुम वहाँ से निकलो भी मत।” चुनाँचि उमर ﷺ सर्ग से वापस आ गये। {सहीह बुखारी: ६६७३}





جمعية الدعوة والإرشاد وتنمية الجاليات بالريوة
هاتف: ٠١٤٤٥٤٩٠٠ - للتواصل: ٠٥٦٩٣٧٤٩٨٦
    OFFICERABWAH